4

मौर्य और गुप्त सेनाएं

आपको ज्ञात है कि हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार समाज निर्मित किया और महान सभ्यता के रूप में विकसित हुए। भौगोलिक और जनसंख्या के विस्तार के कारण भूमि और लोगों की रक्षा के लिए सशस्त्र लोगों की आवश्यकता अनुभव की गई। उन्होंने सेनाओं का गठन किया और बेहतर दक्षता के लिए आधुनिक संगठन निर्मित किए। इस प्रकार से विकसित सेनाओं को युद्ध तथा शांति के समय नियमाचार का सख्ती से पालन करना होता था। इसके फलस्वरूप सैनिकों को समाज में सम्मान प्राप्त हुआ और उन पर अतिरिक्त ध्यान एवं सुविधाएं दी गई। प्राचीन काल की सेनाओं का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि सैनिकों की भर्ती में जाति व्यवस्था का अनुसरण नहीं होता था। सैनिक को उसके लड़ने की क्षमता के आधार पर चुना जाता था। सेनाओं को उनके ध्वज से पहचाना जाता था और ध्वज पूरे देश अथवा साम्राज्य के लिए सम्मान का विषय होता था। यह राष्ट्रवाद का प्रारंभ था।

यदि आपने कभी भारतीय इतिहास पढ़ा है तो आपको मौर्य और गुप्त साम्राज्य के बारे में अवश्य ज्ञात होगा। यह राजवंश बहुत ही शक्तिशाली थे। उनके राजा कुशल प्रशासक थे जो अपने विशाल राज्य का कुशल प्रबंधन करने में सफल रहे थे। आइये हम यह जानने का प्रयास करें कि वह अपनी सेनाओं के साथ क्या कर पाए और उन्हें सेना का क्या सहयोग मिला।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- मौर्य साम्राज्य और उसकी सेना का वर्णन कर सकेंगे;
- गुप्तकाल की सेना और उसके संगठन की व्याख्या कर सकेंगे।

4.1 मौर्य साम्राज्य

जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ा उन्होंने बड़े समूहों का गठन किया और कृषि, खनन, लोहा, तांबा, कोयला आदि में समृद्धि प्राप्त करने के लिए नए क्षेत्रों की खोज की। जनपद, महाजनपद बन गए। महाजनपद मगध, कोसल, काशी, सुरसेन (मथुरा) में बड़ी बस्तियां थीं जो शिल्प तथा उद्योग के केन्द्र बन चुके थे।

समाज में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ और वह था जैन और बौद्ध धर्म का विकसित होना। 544 ईसवी पूर्व बिंबसार मगध का सबसे पहला शासक था इसके बाद मगध साम्राज्य का थोड़ा-थोड़ा विस्तार नंद साम्राज्य के रूप में हुआ। 321 ईसा पूर्व मौर्य वंश की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में हुई थी।

क्रियाकलाप 4.1

इंटरनेट पर प्राचीन भारतीय इतिहास की कुछ पुस्तकें खोजें। इन पुस्तकों पर शोध करके ऐसे चित्र संकलित करें जो महान अशोक के अधीन मौर्य साम्राज्य के विस्तार को दर्शाते हैं। इन सभी चित्रों को अपनी कार्य पुस्तिका में चिपकाएं।

सैन्य दृष्टि से यह जानना आवश्यक है कि किस प्रकार मगध, मौर्य साम्राज्य का केन्द्र बन गया जहां से वे अधिकांश भारत पर विजय प्राप्त कर सका। इनके निम्नलिखित कारण थे-

- इसके आस-पास का भौगोलिक क्षेत्र पहाड़ों से घिरा था। राजधानी, पांच पहाड़ियों से घिरी होने के कारण प्राकृतिक रूप से सुरक्षित थी।
- दूसरे, इसकी भूमि बहुत उपजाऊ थी। गंगा का मैदान होने के कारण कृषि में बहुत समृद्ध थी।
- तीसरे, दक्षिणी क्षेत्र के जंगलों से हाथी और लकड़ी आसानी से उपलब्ध थी।
- चौथे, चन्द्रगुप्त को नंद वंश से एक विशाल सेना विरासत में मिली थी।

मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ था। कौटिल्य अथवा चाणक्य ने अर्थशास्त्र की रचना की है। उसने विश्व को शासन करने का एक व्यवहारिक तरीका दिया जिसमें कूटनीति, युद्ध की रणनीति, विधि और वाणिज्य शामिल है। मौर्य साम्राज्य ने विशाल सेना का अनुरक्षण किया। यह बड़े साम्राज्य को नियंत्रित करने की सभी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त थी। इस सेना के घटक रथ, तलवार, हाथी और पैदल सेना थे। इनके पास छः तरह के रथ उपलब्ध थे। वे निम्नलिखित प्रकार के थे-

1. तीन प्रकार के रथों का उपयोग युद्ध मैदान में लड़ने के लिए किया जाता था।
2. एक प्रकार के रथ का उपयोग केवल प्रशिक्षण के लिए होता था।

3. एक रथ का प्रयोग विरोधी सेना की तरफ मार्च करने के लिए होता था।

4. युद्ध क्षेत्र में दो प्रकार के रथों का उपयोग सामान्य कार्यों के लिए होता था।

रथ दो पहिए, चार पहिए और आठ पहिए वाले होते थे। अर्थशास्त्र में रथों, हाथियों और घुड़सवार सेना के संगठन का उल्लेख मिलता है। जानवरों को रखने के लिए अधीक्षक, पशु प्रशिक्षकों तथा व्यवस्थित क्षेत्रों का होना बेहद महत्वपूर्ण माना जाता था। पैदल सेना के पास तीर-कमान होते थे। धनुष की उंचाई सैनिकों की उंचाई के अनुसार होती थी। इनका उपयोग करने हेतु सैनिक कमान को जमीन पर रखकर बाएं पैर से तीर चलाते थे। कुछ सैनिक भाले लेकर चलते थे। हर सैनिक के पास अन्य शस्त्रों के अलावा एक तलवार आवश्यक रूप से होती थी।

मौर्य साम्राज्य की सेना में छः प्रकार के सेना दल होते थे। पहला दल क्षत्रिय सैनिकों का होता था। क्षत्रिय या वंशानुगत योद्धा सेना दल में सर्वाधिक होते थे। भाड़े की सेना तथा स्वतंत्र सैनिकों की भर्ती होती थी। ये सैनिक साहसिक कार्य के लिए जाने जाते थे। इन सैनिकों में स्थानीय जमींदार, व्यवसायी, मित्र राष्ट्रों द्वारा मदद के लिए भेजे गए सैनिक, विरोधियों के खेमें से दल बदलकर आए सैनिक तथा घने जंगल के पहाड़ी व जनजातीय सैनिक शामिल होते थे।

इस काल की मौर्य सेना के सामरिक संगठन की मूल इकाई पट्टी में एक हाथी पर तीन धनुर्धारी अथवा भालाधारी तथा एक महावत (हाथी प्रशिक्षक व संचालक) तथा तीन तलवारबाज घुड़सवार जिनके पास ढालें, छोटी गोल ढालें तथा बड़े भाले वाले सैनिक होते थे। इसके अलावा इस इकाई में पांच पैदल सैनिक होते थे जिनके पास बड़ी तलवारें व बड़ी ढालें अथवा तीर कमान होते थे। इसे हम निम्न चित्र से समझ सकते हैं।

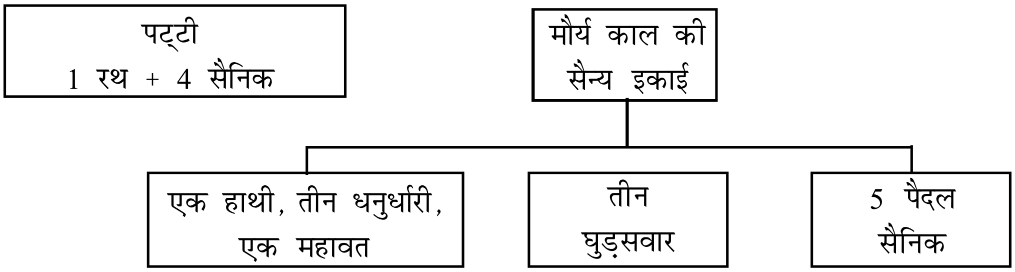

4.1 : मौर्य सैन्य टुकड़ी की संरचना

आज की सैन्य भाषा में यह सेना समस्त हथियारों से लैस थी। 12 सैनिकों की यह टुकड़ी मिलकर एक 'सेनामुख' या 'कंपनी' का निर्माण करती थी। ऐसी तीन कंपनियां मिलकर एक 'गुलमा' या 'बटालियन' का निर्माण करती थीं। इन टुकड़ियों को तीन के गुणज में जोड़ा जाता था। इस समूह को 'अक्षुणी' या 'सेना' कहा जाता था। जिसमें 21,870 पट्टी शामिल होती थी। 'लड़ाकू सेना' का अर्थ रथ, तलवारबाज, हाथी और पैदल सेना के दो या उससे अधिक के योग को दर्शाता है।

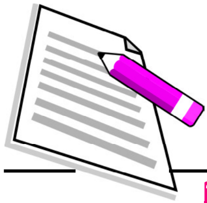

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 4.1

1. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?
2. मौर्य सेना में कितने प्रकार के रथ होते थे?
3. सेना की सबसे छोटी इकाई का क्या नाम था?

4.1.1 कलिंग युद्ध

अशोक को भारतीय इतिहास का सबसे महान राजा माना जाता है, जिसने 269 ई.पू. से 232 ई.पू. तक शासन किया। उसकी, सैन्य गतिविधियों के लिए उतनी प्रशंसा नहीं की जाती जितनी धम्म की नीति के लिए की जाती है। धम्म एक आचार संहिता या आदर्श सामाजिक व्यवहार था जो विश्व के सभी धर्मों के लिए था। यह पूरे साम्राज्य के लोगों के लिए समान नागरिक संहिता थी।

कलिंग युद्ध अशोक के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य और कलिंग राज्य के बीच हुआ था। कलिंग एक सामंती गणराज्य था जो वर्तमान ओडिशा और आंध्र प्रदेश के उत्तरी भागों के तट पर स्थित है। अशोक ने अपना राज्याभिषेक होने के बाद केवल एक बड़ा युद्ध, कलिंग युद्ध लड़ा था। यह युद्ध प्राचीन विश्व इतिहास का सबसे बड़ा और रक्तपात वाला युद्ध था। इस युद्ध के राजनीतिक और आर्थिक, दोनों प्रमुख कारण थे। कलिंग उस समय का सबसे गौरवशाली और समृद्ध राज्य था। वहाँ के लोग स्वतंत्रताप्रेमी और कलात्मक रूप से निपुण थे।

कलिंग साम्राज्य के लोगों को 'उत्कल' कहा जाता है। 'उत्कल' वे लोग हैं जो भारत (वर्तमान भारत) के दक्षिण पूर्वी छोर तक व्यापार के लिए गए थे। इसी कारण कलिंग के पास कुछ महत्वपूर्ण बंदरगाह और शक्तिशाली नौसेना थी।

कलिंग के लोग खुली संस्कृति और समान नागरिक संहिता का पालन करते थे। इस युद्ध में लगभग 200,000 सैनिक (दोनों ओर से) मृत्यु को प्राप्त हुए थे और यह युद्ध अशोक के जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ था। यह भी कहा जाता है कि रक्तपात के कारण युद्ध के मैदान के समीप बहने वाली दया नदी का पानी लाल रंग का हो गया था। इस हिंसा एवं खून-खराबे को देखकर अशोक ने हिंसा को त्याग दिया और अपने साम्राज्य में शांति और सद्भाव को स्थापित किया। अशोक ने अपनी प्रजा को भी समृद्ध जीवन जीने का रास्ता दिखाया। अशोक को यह समझ आ गया कि युद्ध का परिणाम हमेशा मृत्यु और विनाश ही होता है।

4.1.2 अर्थशास्त्र

मौर्यकाल जैन धर्म और बौद्ध धर्म के अलावा अर्थशास्त्र के लिए भी जाना जाता है। अर्थशास्त्र से तात्पर्य धन प्राप्ति और धरती की सुरक्षा का विज्ञान है। 'अर्थ' का तात्पर्य धन रूपी उस भौतिक समृद्धि से है जिस पर मनुष्यों की खुशहाली निर्भर थी। कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, ने चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में 'अर्थशास्त्र' पुस्तक लिखी थी।

इस पुस्तक में राजा द्वारा अपने राज्य पर शासन करने के लिए आवश्यक सभी विषयों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक की शुरूआत में निर्देश दिये गए हैं कि एक राजा को किस प्रकार का आचरण रखना चाहिए, किस प्रकार अपनी प्रजा को जानना चाहिए और एक अच्छा शासक बनने के लिए किस तरह की दिनचर्या का पालन करना चाहिए। यह पुस्तक विधि, वाणिज्य, बजट और बही खाता, विदेश नीति तथा रक्षा मामलों पर भी प्रकाश डालती है। एक कुशल सरकार तथा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक संगठन की आवश्यकता का चाणक्य ने विस्तार से उल्लेख किया है।

सैन्य इतिहास के बारे में 'रक्षा और युद्ध' खंड में जानकारी दी गई है। कौटिल्य के अनुसार एक राजा की तीन जिम्मेदारियां थीं-

- बाहरी आक्रमण से लोगों की रक्षा करना।
- विजय द्वारा अपने राज्य का विस्तार करना।
- लोगों का कल्याण कौटिल्य के अनुसार युद्ध चार प्रकार के होते हैं-
    1. मंत्र युद्ध या मंत्रणा से युद्ध या कूटनीतिक युद्ध
    2. प्रकाश युद्ध या खुला युद्ध
    3. कूट युद्ध अर्थात् खुफिया, गुप्त या मनोवैज्ञानिक युद्ध।
    4. गुढ़ युद्ध या छद्म युद्ध अर्थात् वह युद्ध जो एजेंटों अथवा दोहरे के माध्यम से छिपकर लड़ा जाता है।

? क्या आप जानते हैं?

कौटिल्य ने शासन संबंधी सभी मामलों में राजा को अंतिम अधिकार दिए थे। राज्य के सात घटकों में से राजा को पहला स्थान दिया गया है। राज्य के सप्तांग (सात अंग) निम्न हैं। राजा (स्वामी), दंड (अरण्य), जनपद (एक निश्चित क्षेत्र), अमात्य (मंत्री), मित्र (दोस्त), दुर्ग (किला), कोष (खजाना), शत्रु (दुश्मन)- अर्थशास्त्र द्वारा जोड़ा गया आठवाँ तत्व चतुरंगबल। कौटिल्य के अनुसार हर राजा को सैन्य प्रशिक्षण लेना चाहिए।

कौटिल्य ने चतुरंगबल (घुड़सवार, पैदल सेना, रथ और हाथी) को सेना का मुख्य अंग माना है। इनमें से हर एक को एक सेना नायक के अधीन रखा गया था। वह सेना को चिकित्सा सेवा, भर्ती नीति, युद्ध योजना तथा किलाबंदी आदि की भी जानकारी देता था।

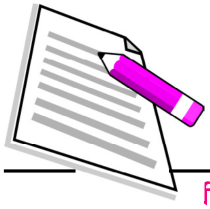

4.2 गुप्त साम्राज्य

गुप्त साम्राज्य की काल अवधि 300 ईसवी से 550 ईसवी तक मानी जाती है। मौर्य वंश और गुप्त काल के बीच यह विशाल साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में टूट गया था जिन पर कनिष्क, सातवाहन और कलिंग शासकों का शासन था। सेना का मूल संगठन और युद्धनीति इस काल में लगभग एक जैसी ही थी। गुप्त साम्राज्य की सेना पारंपरिक चार भागों या चतुरंगबल पर आधारित थी। अन्य सेनाओं के विपरीत उन्होंने इस समय तक घुड़सवार सेना को भी शामिल कर लिया था। कृष्ण शासनकाल के आधार पर उन्होंने अपनी घुड़सवार व तलवारबाज सेना की वेशभूषा व बख्तरबंद बनवाए। कुषाण शासन काल के आधार पर सैनिकों को वर्दी और नवीन हथियार प्रदान किए गए।

गुप्त शासकों ने बख़्तरबंद घुड़सवार सेनाओं को प्राथमिकता दी जो भालों और तलवारों से आक्रमण करते थे। उपयोग में लाए जाने वाले हथियार जैसे धनुष एवं बाण बांस अथवा लकड़ी के बजाय धातु के बने होते थे। गुप्त शासक पैदल सेना के धनुर्धारियों पर बहुत अधिक भरोसा करते थे और धनुष उनकी सेना का प्रमुख हथियार था। लंबा बाण यानी भाला धातु या बांस से बने होते थे। धातु का सिरा होने के कारण यह घातक भी था। यह भाला लंबी दूरी तक मार सकता था। साथ ही घुड़सवारों की घुसपैठ रोकने का अच्छा साधन भी था। लोहे की शाफ्ट बख़्तरबंद हाथियों के विरुद्ध प्रयुक्त होती थी। अग्नि बाण इस सेना का हिस्सा नहीं थे जैसा कि इनके बारे में कहा जाता है।

गुप्त साम्राज्य का युग मुख्यत: विजय पर आधारित था। यह राजा पूरे भारत में अपने राज्य का विस्तार करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपने राज्य के आस-पास लगे छोटे-छोटे राज्यों पर आक्रमण करके उन्हें अपने राज्य में मिलाकर विस्तार प्रारंभ किया। चन्द्रगुप्त का पुत्र समुद्रगुप्त राज्य विस्तार करने में पारंगत था। उसने अपने शासनकाल में संपूर्ण भारत को एक किया। साथ ही भारतीय सीमा के बाहर भी साम्राज्य का विस्तार किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विशाल सेना का निर्माण किया जिसमें 500,000 पैदल सैनिक, 50,000 घुड़सवार, 20,000 रथ सैनिक, 10,000 हाथी के साथ-साथ 1200 जहाज की नौसेना भी थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर अपना शासन स्थापित किया। इसलिए इसके शासनकाल में गुप्त साम्राज्य सबसे बड़ा व शक्तिशाली साम्राज्य था। उन्होंने छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर एक बड़े राज्य का निर्माण किया और यह भी सुनिश्चित किया कि उनका राज्य छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित होकर न टूटे। मौर्य व गुप्त काल के पतन के बाद सेना कमजोर पड़ गयी जिसके कारण आक्रमणकारी सुल्तान, राजाओं को हराकर भारत पर कब्जा करने में सफल हुए।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. अशोक महान ने कब शासन किया था?
2. अशोक को हिंसा का मार्ग त्यागने के लिए किसने प्रेरित किया?
3. 'अर्थशास्त्र' में किन विषयों के बारे में लिखा गया है? किन्हीं तीन विषयों के नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

- पहले मौर्य और बाद में गुप्त वंश के राजाओं ने भारत को एक विशाल साम्राज्य में एकीकृत किया तथा इसे बाह्य आक्रमण से बचाया।
- दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत को छोड़कर शेष संपूर्ण भारत पर गुप्त व मौर्य शासन रहा। दोनों राजवंशों के पास नौसेना सहित बड़ी सेना थी।
- उन्होंने शासन प्रणाली, युद्ध नीति तथा श्रेष्ठ संगठन कार्य को विस्तृत रूप से विकसित किया जिसका उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है।
- सेना की मूल ईकाई (पट्टी) को एक कुशल युद्ध मशीन के रूप में परिष्कृत किया गया।
- कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात एवं मौतों के पश्चात् अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ। उन्होंने हिंसा का मार्ग छोड़कर शांति व सद्‌भावना का मार्ग अपनाया ताकि लोग खुशहाल जीवन जी सकें।
- युद्ध के विज्ञान और हथियारों में धातु के बेहतर प्रयोग से हथियारों के निर्माण व शैली में परिवर्तन हुए।

पाठांत प्रश्न

1. किन कारणों से मौर्य साम्राज्य भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य बन सका?
2. मौर्य सेना में सबसे छोटी सैन्य इकाई (पट्टी) का संगठन कैसा था?
3. कलिंग युद्ध में कितने सैनिक मारे गए?
4. गुप्त काल में हथियार बनाने के लिए किस सामग्री का प्रयोग किया जाता था?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. राजा बिंबसार
2. छः
3. पट्टी

4.2

1. 269 से 232 ईसा पूर्व
2. बड़े स्तर पर हुए जानमाल के नुकसान से क्षुब्ध होकर अशोक महान ने हिंसा का मार्ग त्याग दिया।
3. रक्षा एवं युद्ध, विधि, कूटनीति